

①

॥ भा. वा. २५ ॥

॥ श्रीरामविजयग्रंथपंचविंशतिवाक्याध्यायप्रारंभः ॥



॥ श्रीराम ॥

॥ ११ ॥

(2)

श्रीगणाधिपतेयेनमः॥ श्रीगुह्यपेयेनमः॥ श्रीसोमसदाशिवायनमः॥ पुर्विहिरशिं
धुमधुन॥ चतुर्दशरत्नं काठिलिनिवडुन॥ तैसाराम कथार्णवशोधुन॥ रामविजयका
ठिला॥ १॥ दद्यापासुनिनिधेनवनिच॥ त्रिंस्वातितोयापासावमुक्त॥ किंदशरधापा
सावरधुनाय॥ महिमाबद्धतजयाच॥ २॥ किंज्ञानापासुनिशंति॥ किंशंतिपा
सुनिविरक्ति॥ किंविरक्तिपासुनिनिवृत्ति॥ पदविशेषपविजे॥ ३॥ तैसावाम्नि
कमतिचाविस्तार॥ लोरुसमकथाधिसाचार॥ याचापावावयापैतपा
रा॥ वत्स्यासशक्तनकेचि॥ ४॥ पिताजादरिद्रकसन॥ त्यासमार्गिसापडेबहु
धन॥ परितोयथाशक्तिकसन॥ मोटबांधिजशिका॥ ५॥ तैसायथामतिकसन॥
रामविजयनिवीडलापुर्ण॥ असोपुर्वाध्याईवाकिसुन॥ रावणासन्मुखवैस
ला॥ ६॥ मुगुटावरिशोभेदिव्यमणि॥ तैसाबंगदविराजेपुछासनि॥ ७॥ ८॥

॥ विजय ॥

॥ ११ ॥

२A
 अणेदृशामुरवाभैकश्रवणि॥ शब्दरत्नं भतिसरस॥ ७॥ नरदेहश्रियेऽनिपाहि॥
 किर्तिउरवाविमुवनत्रि॥ ज्ञेयधन्यसर्वेहि॥ बहुकाळहृणतिपैमार्गं॥ ८॥ विवेकं
 सद्बुद्धिश्चाबळं॥ दुस्तरं नेटाकविंकुशळं॥ संतसंगतिरसाळं॥ वचनेहृदई
 धराविं॥ ९॥ कोणाचें हळणन करावें॥ दुष्टवचनेन बोलावें॥ परंचे गुण जाणानि
 बरवे॥ परोपकार करावा॥ १०॥ हेचि वर्तणुक देवान॥ संतुष्ट होति गोब्राह्मण॥
 मग सदांचि लिंकल्याण॥ तश्चि धन्य सारि॥ ११॥ सर्वाभुति जगं निवास॥ त
 रिन करावा कोणाचा द्वेष॥ वर्मस्पृशे विरस॥ सहसा कोणा न बोलावे॥ १२॥
 कामक्रोधमदमत्सर॥ हे शत्रुघालावे बोर॥ न शिवंत जाणे न शरिर॥ सारा
 सार विचारिजे॥ १३॥ सबळ सत्कर्म चरण॥ करावें वेदाधार करुन॥ मित्रता हा न
 भिमान॥ सहसा हि न धरावा॥ १४॥ जैलें जकावरि जळयत्रा॥ वरिजेळें न भिजे नुमात्र॥

॥ श्रीराम ॥

॥ २ ॥

(3)

तैसेसत्कर्मकरनिसर्वत्र ॥ नलिंपोवेंकोठेहि ॥ १५ ॥ मनोजयकरणि करनि ॥ योजवि
मगवद्भजनि ॥ जगदाभासमिथ्या मानेनि ॥ आत्मस्वरूपिं रमावें ॥ १६ ॥ परधनबा
प्तिपरहारा ॥ येथेंचित्तनद्यालिराक्षतेन्द्रा ॥ सवै ॥ ज्ञावधरिंजेवरा ॥ सद्गुरुत्वचनिस
र्वदा ॥ १७ ॥ सत्यमागमिचित्तेवुन ॥ दुरत्यागेवेंदुर्जन ॥ कुशकाळबालियापुर्ण ॥ १८ ॥ विजय ॥
स्वधर्माचरणनसांडावें ॥ १९ ॥ यथाव्यापाराज्यकरि ॥ दुष्टतितुकेबाधिसंकंरि ॥ मग
वद्भजनिबहोरत्रि ॥ तनुबापुनिक्षिजवावि ॥ २० ॥ शमदमादिउपरति ॥ दयाक्षमा
तितशांति ॥ याजवकिरक्षाव्यापति ॥ बहोरत्रिप्रित्तिने ॥ २१ ॥ भक्तिवैराग्यज्ञा
न ॥ आनंदसद्बिद्यासमाधान ॥ हेजवकिरक्षाविबनुदिन ॥ आत्मप्राप्तिकारण ॥ २२ ॥
दैवंभाग्यविद्याहायबपार ॥ त्याचागर्वनधरावाबनुमात्र ॥ अथवाकाळंतरेनले
दरिद्र ॥ परिधीरनसाडावा ॥ २३ ॥ यालागिंदशमुखवाबवधरि ॥ २४ ॥ २५ ॥

॥ २ ॥

(3A)

मासिंशब्दरत्नश्रवणकरिं॥ तरिबयोध्यापतिशिंमैत्रि॥ सर्वभावेकरिंका॥ २३॥ श्री
 रामकेवळगुणनिधान॥ दुजियाचाबपराधदेशगुण॥ ताकाळजायविसरेना॥ अं
 तः कर्णशुध्यसदां॥ २४॥ पराचेअकतांलक्षण॥ स्वयंवारवाणिरधुनंदन॥ येकबाणये
 कवचन॥ येकपलिनितजेकां॥ २५॥ त्यारधुपतिशिंसख्यकरनि॥ अर्पिंआतांजनक
 नंदिनि॥ मगतुंअस्यलंकाशुवनि॥ यद्वर्कवरिनोदंकां॥ २६॥ तुंजयाचाहण
 विशिभक्त॥ तोशिवरधुपतिशिध्यात॥ त्याशिंवैरकरितांयथार्थ॥ स्वामिद्रोहिहो
 शितुं॥ २७॥ सनकसनंदनसनकुमार॥ मुख्यविरचिबाणिपुरधर॥ हेरधुपतिचे
 आज्ञाधार॥ तरितोमित्रकरिंतुरे॥ २८॥ जोवेदउदयाचकिचादिनकर॥ जोमहामा
 येचानिजवर॥ तोहाबयोध्यानाथउदार॥ तरितोमित्रकरिंतुरे॥ २९॥ जोसुनिक
 चिद्रूपगम॥ जोअनंतब्रह्मांशचाचारभा॥ गुणसागरशितावळम॥ तरितो॥ ३०॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ३१ ॥

(५)

कमळोद्भवकमळावर ॥ कृपाळधरतिचे ज्याचे मित्र ॥ लोहाजगदंधारधुविरा ॥ तरि
तो ॥ १॥ ३१ ॥ वेदशास्त्रपुराण ॥ नारदादि ज्याचे गतिगुण ॥ लोहादशशतमुखंग
शयन ॥ तरितो ॥ ३२ ॥ शतकोटिब्रह्मपरायकृतन ॥ तो परतेन बालाशरण ॥ त
मितयावरिरधुनंदन ॥ सर्वोहूनि जितिकरी ॥ ३३ ॥ भक्तिभावें बर्पितान्ति ॥ राम
मानि जैसा कनकचक्र ॥ जो मन्त्रहो उबिचारपाळ ॥ अंतरबाह्यरसिपै ॥ ३४ ॥ त
रित्यादि पंचरथनंदन ॥ शरण जायादि पंचवदन ॥ जनकजाहे ममकन्या ॥
भावोनि बर्पिरघोसमाते ॥ ३५ ॥ दुःखकुंठातुं परमसंज्ञान ॥ टकिनि वेदाचिखे
उंकरन ॥ तरि पद्मिणि कुंकभुषण ॥ सरवाकुरिं सर्वस्वे ॥ ३६ ॥ भैरिं अंगदाचि
वचने ॥ जे विवेकभुमि विनिधाने ॥ किं भक्तिसांगरिं विखे ॥ दुःखकुंठाशिसम
पिलि ॥ ३७ ॥ याउपरि दशकंदर ॥ परमदुर्बुद्धिबविचार ॥ घेतेशिपि जे वैश्वानर ॥

॥ विजया ॥

॥ ३१ ॥

तैसाहोमलातेकाकिं॥३८॥साधुचेवर्मलक्षुन॥छक्तिजैसेकांदुर्जन॥तैसा
 अंगदाप्रतिरावण॥बोलताजातातेकाकिं॥३९॥हरणमर्कटाबक्विरा॥कोणा
 चालुंपालेखाईरा॥मजरावणशिपामरा॥शिष्टाईकरबालाशि॥४०॥मस्यक
 अग्निपुढेंरण॥किशिवपुढेंचवाण॥किंभेगेंद्राशिगुण॥जंबुकशिकुंडपा
 तला॥४१॥मर्कटातुझापीताकोणा॥सासांगबाधिंमजलागुन॥यावैरितरा
 हृदयरन॥प्रतिवचनदेतस॥४२॥माझापितापुसशिकोण॥तोतुंबासुनने
 णशिदुर्जन॥जेणेतुजकक्षेतदादुन॥चतुःसमुद्रिंस्नानकेले॥४३॥मगमशि
 यापालरवावैदेखा॥आयुनिबाधिलशिमस्यका॥तुझ्यादाढ्यामिश्रासमु
 क्दरेखा॥म्याउपीडल्याबाकपणि॥४४॥माझ्यामुत्रादेकेकसन॥मस्यकातुसंद
 टलेवदन॥मगतुझापितायउन॥मिक्षामोगवाकिपाशि॥४५॥मगतुझ्यामुखा

॥ श्रीराम ॥

॥ ४ ॥

(5)

शिमसताउनि ॥ शिरिपांचपाटकाडुनि ॥ लंकेतदिधलाभिरकाउनि ॥ पांडुधरनि
लेकाकिं ॥ १६५ ॥ बैसाइक्रसुतमहावकि ॥ तुंगुनलासज्यविक्रसावकि ॥ तयत्वा
सुतमियेकाकिं ॥ शिखासुजकसंवाले ॥ १६७ ॥ आंतापुसशिलकोणाचाद्युत ॥
अयोध्याप्रसुजोत्पुनाथ ॥ सुखाउरावरतचापनहुन ॥ जेणेउचलेनिमो
डिले ॥ १६८ ॥ जेणेसुसिताटिकामहुन ॥ विसकोटिपिशितासन ॥ त्यासहितसु
बाहुमासन ॥ मरिचिउडविलबापवात ॥ १६९ ॥ सुसिभगिनिसुर्पनखा ॥ जाणे
केलिनिर्णारिका ॥ तोसुमित्रायदस्मरारिरखा ॥ त्याचादुतमिबसे ॥ १७० ॥ व
धुनियांखरदुशण ॥ निःकंटककेलेजनस्थान ॥ तारामपंचाननचिवसुजा
ण ॥ घेउनिजालारिजंबुका ॥ १७१ ॥ किं होमशाकेतनिधेध्वान ॥ पळेपुसडाश
धेउन ॥ किंदेवग्रहातमळिण ॥ हिंसकजैसासंवरे ॥ १७२ ॥ किं ग्रहिनसत्तांमुखधणि ॥

॥ विजय ॥

॥ ४ ॥

तस्करसंचरेकोशसदनि॥ तैशिड्यानक्रिउचलेनि॥ आलासघेउनिपतिता॥ १३॥
 त्यातुजचोरचाकाढितां माग॥ सुवेळेशिवालशितारंग॥ तुझ्याआयुष्याचि
 भरविशिग॥ तेतुंनेयाशिशतमुखी॥ १४॥ पुछावरिपायपडलां देख॥ खवळेजे
 साधेदभुक्॥ तैसाप्रतिउतरदशमुखी॥ अंशदशिदेतसे॥ १५॥ ह्मणेमूर्कटमिदश
 वदन॥ वांन्तरासहितरामलक्ष्मण॥ सायतकिर्नगिह्मन॥ कुंभकणशिसांगे
 निया॥ १६॥ सुरांसहितसहस्रनयन॥ वंदियातलाजाककुन॥ तेथेमानविरा
 मूलक्षुमण॥ जितचिबाणिनयन॥ १७॥ गस्तंडसर्पमस्तकिंचामणि॥ नेला
 ताडीरदेईलेआणनि॥ तरितुहासजनकनंदिनि॥ प्रासहोईलमाधारि॥ १८॥
 गजमस्तकविदातन॥ मुक्तघेउनिगलापंचानन॥ तेमिउनिदेईलपरलेन॥ त
 रिजानीकदेईनमि॥ १९॥ अरईद्रमाकाउंफेन॥ नित्यमजलणियेघेउन॥ २०॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ५ ॥

(6)

छत्रधररोहिणिरमण ॥ सहस्रकिर्णदिपिकाधरि ॥ ६० ॥ रसनायकवाहेपाणि ॥ व
स्त्रधुतसदाबिनि ॥ ग्रहिचाकरफेडुनि ॥ लोकप्राणेशराक्षितसे ॥ ६१ ॥ बैसाभिसम
र्थदशवक्त्र ॥ तैथेकायसेनरवांबर ॥ मोगेयकपालखाईर ॥ चोसनलंकेंतबालें
होतें ॥ ६२ ॥ तैणेउपीडितांबशोकवना ॥ जालिसभेशिबाणिल्लाधरना ॥ पुछास
कावित्ताबन ॥ नगरजाकुनिपवला ॥ ६३ ॥ तोपुकाजरिभटलवांबर ॥ वरि
लात्काळचिकरिनचुर ॥ ह्मणेमगवाकितुत्र ॥ बैकभश्यकारधिसा ॥ ६४ ॥ तु
सेअसंपरव्यदळसंक्लसना ॥ टाकिलेसावपुत्रमारना ॥ इडजितविवरिंकोडुन ॥ अ
शोकवनविष्टवंशिलें ॥ ६५ ॥ तैतुसवकरवणा ॥ कोठंगेलेंहोलेंस्वकमळिषा ॥
तुजशिखाकरावयादुर्जना ॥ पुढाआलाअसेमासति ॥ ६६ ॥ त्रिभुवनपीलिशि
तावद्धम ॥ जोत्रेलोक्यनगरआरंभसंभ ॥ तारामाशिह्मणशिराशम ॥ ६७ ॥

॥ विजय ॥

॥ ५ ॥

(6A)

दशमुखवाचायर्थतुं ॥ ६७ ॥ इतरवोहकअणिमगिरिथि ॥ वरकडाजअणिभैराव
 ति ॥ चिंतामणिसुर्यरथि ॥ इतरबश्वासमाननके ॥ ६८ ॥ स्वद्योतअणिचंडीकिर्ण ॥
 किंदुरात्माअणिसुपर्ण ॥ सकळवांनरअणिवायुनंदन ॥ नकुलिसमानराक्षसा
 ॥ ६९ ॥ परिस्रअणिइतरपाषाण ॥ वरकडपशुअणिशिववहन ॥ भगणअणिरोहि
 णिरमण ॥ नकुलिसमानराक्षसा ॥ ७० ॥ सकळपर्वतअणिकनकाचक ॥ इतरकि
 डेअणिफणिपाक ॥ तैसामनुशासमानमालनिक ॥ अपवित्रातुकविह्वणशि
 ॥ ७१ ॥ सुंदशमुखवाचस्तहोशि ॥ शिवकंदमगजालाशि ॥ शिलादेविनिश्चयसि
 ॥ आदिमायाभवानि ॥ ७२ ॥ रणमंडळहंचकुड ॥ राक्षसबाहुतिपडतिउदंड ॥ शेवटि
 पुणालुतिप्रचंड ॥ तुसिचालुंदशमुंडा ॥ ७३ ॥ तुवांकेलंवेदाध्ययन ॥ जैसंराजभाव
 रिचंदन ॥ किंशडरसमाजिनेठन ॥ हर्विपाकिंफिरविजे ॥ ७४ ॥ सुंदशमुखवाचेंवनवर ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ६५ ॥

(२)

तुजवधावयापारधिरधुविर॥ युवेकचक्रिसमरधिर॥ येउनउमाजकला॥ ७५॥ अं
गदत्तेशब्दकविण॥ हृदईखोचतिजैसेबाण॥ परमक्रोधेशवण॥ वळिनंदनाप्रति
बोले॥ ७६॥ ह्मणोरमर्कटावनचरा॥ तुंमुभारजालशिपामरा॥ तुझापितामासनि
तारा॥ सुग्रिवेशिदिधालि॥ ७७॥ पित्रुसुजनधेवतुझेनि॥ तरिप्राणदेईसमुद्रजि ॥ विजय॥
वनि॥ अथवामाझेपाठिशियेउनि॥ निघेनिंमज्यका॥ ७८॥ वधुनसुग्रिवरधुनं
दन॥ तुजकिस्किंदेचैराज्यदेईन॥ तुमामालविभिच्यारिण॥ सुग्रिवेशिव
रिलेलिणे॥ ७९॥ सुग्रिवबाणिरधुविर॥ तुझेमुखशत्रुसाचार॥ अंगदह्मणेश
ककुमर॥ रामबाणमुक्तजाला॥ ८०॥ राघवप्रसादेकरनि॥ वळिबक्षयसायु
डेसदनि॥ दशमुखबाहुजयक्षणि॥ शिखातविनजाणपा॥ ८१॥ मासिया
पाणिप्रहरेंकरनि॥ दशमुखेंतुसिंटाकिनखेदुनि॥ तुझापुतपार्थविभुवनि॥

॥ ६५ ॥

मिजाणतों अपवित्रा ॥ ८२ ॥ सहस्रार्जुनचे बंदि जाउन ॥ पडला होला शिकि
 ते कृदिन ॥ तो तुंजा जिवदन ॥ दारव वितों लाजे शिना ॥ ८३ ॥ मग बळिचे धरि
 जाउनि देखवा ॥ बंदि पडला शिभयका ॥ तेथें दाशितु जसे ललित किरका ॥
 कसे सदति धिडि धिडि ॥ ८४ ॥ जैसे तूं पुर पार्थि देखवा ॥ नलाज शिदा वितों
 मुरवा ॥ तुसे छेदा वया दाहिगस्तका ॥ खुबि नशिध्य जालसि ॥ ८५ ॥ जैसें बै
 कलां दशकंदरा ॥ दिज पंक्ति रागिडि बंधरा ॥ सवेग वेढिलें शस्त्र ॥ विद्युत्पाय ते
 काळि ॥ ८६ ॥ शेवका सप्तपेद शकंटा ॥ धरा रे धरामर्कट ॥ तों चौधराक्षस ब
 ककट ॥ धावे निधरि ते जाहोले ॥ ८७ ॥ अगद द्रढ धरिला ॥ वाळि पुत्रे देखवा
 न ते वेकां ॥ अडुल पकराक्रम प्रघटकेला ॥ क्षणमात्र नलगला ॥ ८८ ॥ क
 लात किंकळिसमाना ॥ होक समिसें वाजविगगन ॥ रावणाचे हृदई पुर्ण ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ७॥

८

पुच्छयायदिद्यता ॥ ८९ ॥ रावणमस्तु किंचामुगुटतेजाक ॥ चरणांगुष्ठं उडविलाता
त्काक ॥ उध्वं उडतां उतावेक ॥ मंडपमस्तु विवैसला ॥ ९० ॥ चौदागां वेंजो विस्तिर्ण
॥ प्रमेसउणा चंडकिर्ण ॥ तोघेउनिवाकिनंदन ॥ गेलाक्षणनलगतां ॥ ९१ ॥ मु
जिजउलेजेचौघेजण ॥ त्यांचेअंतराळिगेलेप्राण ॥ लेंबतिप्रतेंहोउन ॥ वाकि
नंदनजातसे ॥ ९२ ॥ आलादेखेनिवाकियुत ॥ बाश्चिर्यकरिजनकजामात ॥
अंगदउतरलाबकस्मात ॥ कपिनाथहस्यजे ॥ ९३ ॥ देडीचिंघ्रेमेंसोडुनि ॥ मंड
पतेकांठेविलाधरणि ॥ त्रिभुवनपविचवरणि ॥ मस्तकअंगदेंठेविला ॥ ९४ ॥
प्रितियउनमिलिंद ॥ शेविपद्मकोशिचासुगंध ॥ तैसाचविरअंगद ॥ रघुविर
पादाब्जिमिनला ॥ ९५ ॥ मगतोजगदानंदकंद ॥ हृदईबालिंगिलाअंगद ॥
सकळकपिशिबानंद ॥ अंगदाशिमेटतां ॥ ९६ ॥ रावणाचा मुगुटतेवेकां ॥ ९७ ॥

॥ विजय ॥

॥ ७॥

(8A)

अंगदेरामापुढेठेविला॥ तौविमिषणाचेमस्तकिंघातला॥ दशरथालमजेतेसमई॥
 ॥९७॥ (अंगदाशिखणेरधुनंदन॥ मंडपयेथेंबाणिलाउंचलुन॥ पुढेकौठेंवैसेलवि
 मिषण॥ शिंकूसनघालोनियां॥ ९८॥ जैसंवकिंसुलेंजैकोनि॥ मंडपउंचलिला
 तेचक्षणि॥ शेषमस्तकिधरिबवनि॥ तैसाघेठनिजातसे॥ ९९॥ तैथिवातेथें
 मंडपठेविला॥ सुवेकेशिपरतोनजाता॥ राक्षससमुदायलेवेकां॥ (जाश्चिर्य
 परममानिति॥ १००॥ यवढापुसपाथकरनि॥ राक्षसेंद्रासगांजुनि॥ मंडपगेला
 येठनि॥ सेवंचबाणुनिठेविला॥ १०१॥ असाराधवापुढेवकिनंदन॥ सांगेलेंके
 चेंवर्तमान॥ नानापरिवेधिवारावण॥ परितोनमानिदुष्टात्मा॥ १०२॥ गिरिमस्त
 किंवरपेजळधर॥ वरितेथेंजनुमात्रनराहेस्थिर॥ तैसाबोधितादशकंदर॥
 परिकांहिंचनउपतिष्टे॥ १०३॥ नित्यदुग्धेकाणिलावायस॥ परितोनकराजहंसा॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ८ ॥

(९)

दद्यामाजिकोऽस्माबहुवस ॥ धालितां उज्ज्वलकेचि ॥ ४ ॥ शिकताशिजविलिव
हुसाठ ॥ परितेकदांनकेचिमवाठ ॥ किंपरिसनेउनिताकाठ ॥ स्वापराव्यर्थतावि
ला ॥ ५ ॥ जन्माधापुढेदिपजाणा ॥ विंवधिरापुढेवाजविलासद्रविणा ॥ सारासार
समजेना ॥ शतमुखीसजेसंकां ॥ ६ ॥ किंशक्रेरमाजिनेउन ॥ कुडुध्यापुरिजेव
हुदिन ॥ परित्याचैअंतरपुष्प ॥ गोडनदेवबुमात्र ॥ ७ ॥ शोडशापच्योरंपुजिले ॥ विजय ॥
प्रेत ॥ तेंसर्वगेलेजेसंव्यर्थ ॥ तैसावधिआलंकनाथ ॥ परिनायकेसर्वथा ॥ ८ ॥
जोवरिशशिचंडकिर्ण ॥ तोवरिशजाकलाविमिषण ॥ येकवचनितुंशितारमण
॥ तुसेवचनव्यर्थनके ॥ ९ ॥ युध्यकेलियावाचुनि ॥ कदानेदिजनकनंदिनि ॥ रा ॥ ८ ॥
धवेद्रैसंभैकेनि ॥ चंडदेदीपटियेले ॥ १० ॥ जैसारजनिअंतिवासरमणि ॥ अ
कस्मात्तपुर्वेसदेखिजेजनि ॥ तैशिकोदंडाचिगवसणि ॥ नरविरोलमेकाठिलि ॥ ११ ॥

किंतेमेधातुनिवेगादि॥प्रकयचपकानिवडलि॥तैशिगवस्यणिकाडितोप्रभाप
 डिलि॥कोदंडचिबकस्मात्॥१२॥क्षणनलागतंचढविनागुण॥३भाठाकुला
 शिलारमण॥वोढिवोढितांबाकर्ण॥क्षणकरिलिससद्विपे॥१३॥काकचर्मनि
 बैसदचक्र॥वैशिसुग्रिवेंदिधलिहंक्र॥अठरापदेवानरदेख॥गर्जनाकरित
 उठिला॥१४॥बाहानरकोटिरिस॥हंकरोरसेभरितिजाकाश॥पृथ्विडकम
 कितानागेश॥ग्रिंवारखालेसरसावि॥१५॥दिग्गजाचिवैसलिहकि॥कुर्मेषहि
 धरारिलि॥यज्ञवराहातबि॥सांवरुनदेसदांताते॥१६॥येकदाचक्रपिचैमुमु-
 कार॥अकतांदचकलेनिर्जर॥शुकिनेदाटलेंसमग्र॥मेसमंदारकापति॥१७॥
 विसकोटिवाब्बरधेउब॥लंकेवरिधाविनलासुरेवण॥जैकिंवारणचक्रावरि
 पंच्यानन॥गर्जतधावेनिःशंक्र॥१८॥सकळपापासयेकनाम॥क्षणेजाकुनि

॥ श्रीराम ॥
॥ ११ ॥

①

करिभस्म ॥ तैसातेवाब्धरोतम ॥ अंजनितनयधाविला ॥ १९ ॥ सकळवांनराशि
शेनापति ॥ निकधविलासमिरगति ॥ धुकिनेलोपलागभस्ति ॥ वोटकला
तमाडला ॥ २० ॥ जालायकचिहाहाकार ॥ गजवजितेलेंकानगर ॥ वेळसां
डुनिनदेश्वर ॥ बुडउपोहेपथितें ॥ २१ ॥ उदकावरिसुंविनिफळ ॥ तैसेंउळम
ळिभुमंडळ ॥ वरिवासुडतनिराळ ॥ भाणोभडमडाश्चिचति ॥ २२ ॥ मेसबै
सेलेकेचेहुडे ॥ वरीरचितनेशस्त्रविजुपाडे ॥ प्रळयविजुचेनिपाडे ॥ नगनश
स्त्रंशळकैति ॥ २३ ॥ लेंकदुर्गाकरिवांनरा ॥ वेळेचिचळसिप्रतापशुरा ॥ वेशिध
तनिरजनिचर ॥ आसडुनिरवालिंपाडति ॥ २४ ॥ उळ्हाटयंत्राचेभडमार ॥
कोट्यानुकोटिपर्वतथोर ॥ येऊदंविभिरकावितेवाब्ध ॥ करितिजसुर ॥
भिंडमाळाशस्त्रअपार ॥ असुरवतनिभिरकाविति ॥ २५ ॥ कोट्यानुकोटिपर्वतथोर ॥

विजय ॥

॥ ११ ॥

यकदांचमिरकावितिवाब्बर॥ वरिलयंत्रेहोतिचुर॥ रजनिचरांसहितेपै॥ २५॥
 दुर्गावरिराक्षसपाहिं॥ वाब्बरझोडितिदृक्षधाई॥ दुर्गपरिघत्तेसमई॥ राक्ष
 सप्रेतानिबुजियेन॥ २७॥ पुच्छदोगवरिटाकोनि॥ असुरांचेप्रवेशिगेउनि॥
 येकदांचपाडितिबासडुनि॥ खंदकमाडिप्रेतवत॥ २८॥ येकअकस्मात्तकीपउ
 ठेनि॥ राक्षसपाइंधरेनि॥ गरगरांमिरकावितिगगनि॥ आपटुनिधरणिवरि
 मारिति॥ २९॥ येकराक्षसांचिपोटेफाडिति॥ चरणेकरनिशिक्तेलोडिति॥ यक
 प्रेतउचकुनिमारिति॥ मिरकावितिउकवांन॥ ३०॥ आटलेबहुतरजनिचर॥
 गोपुरावतनिदृअकंदर॥ विलेकिदिशाअवर॥ तोंवानरमयेदिसत्तसे॥ ३१॥
 स्वशैल्यासदशकंदर॥ ह्मणकायपाहातानिधाबाहेर॥ आपटुनियांसमस्त
 वाब्बर॥ माजवासमरभुमिवेगे॥ ३२॥ व्यातुरंगदकसागर॥ निधातालंके

॥ श्रीराम ॥

॥ १०१ ॥

(11)

लुनबाहिर ॥ कोट्या लुकेटि बसुरा ॥ पाईचे पुढें लकपति ॥ ३३ ॥ पर्वतास मानरज
निष्कर ॥ विक्राक तोडें जाकिं शेंदुरा ॥ बाबर शेंटिमयेकरा ॥ जि काबार कलक
कळिति ॥ ३४ ॥ खदिरांगार धगधगिति ॥ तैसे नेत्र त्यांचे बारका ॥ मद्यमाने
जाते उबमत ॥ शस्त्रें घेउनि उसळति ॥ ३५ ॥ सुरां विशिरे रेखुनि ॥ त्रिदंबाधि
लिंचरीणि ॥ यमद्रष्टा सकळति गगनि ॥ रावे शंकर निगडति ॥ ३६ ॥ वोडये
असिद्धता शक्ति ॥ येक बुच तो मरचने घां वलि ॥ गदापरिध चक्रे सकळ
ति ॥ दंडि फिंजारति पामरे ॥ ३७ ॥ दांढराचे करन पुतळे ॥ घातले चरीण ते
रळे ॥ हाक देति परमबळे ॥ येक दंक्विस्वहि ॥ ३८ ॥ दृष्टा पित्त उर्विमंडळ ॥ क्षि
पति देवानोद्यावारे सकळ ॥ तुमच्या रामा सहित दळ ॥ रणांगणिय शिलें ॥
॥ ३९ ॥ त्याचे पाठि मागे अश्वमार ॥ नाना जातिचे मनोहर ॥ वरि बैसले राउत असुर ॥

॥ विजय ॥

॥ १०१ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com